Sanchar Sutra | ISSN No. 2584-1769

द्वा सुपर्णा की नायिका कौमुदी – शक्ति का प्रतीक

शैंकी

स्नातक शोधार्थी (संस्कृत ऑनर्स, चतुर्थ वर्ष,

मिरांडा हाउस, दिल्ली विश्वविद्यालय)

सारांश (Abstract)

भूमिका

भारतीय संस्कृति में नारी को सदा से शक्ति का प्रतीक माना गया है। वेदों से लेकर आधुनिक साहित्य तक नारी के विविध रूपों का वर्णन हमें प्राप्त होता है । नारी कभी माता के रूप में स्नेह तो कभी संरक्षण प्रदान करती है। वह प्रेरणा के रूप में समाज को उन्नति की दिशा भी प्रदर्शित करती है । इस संदर्भ में संस्कृत साहित्य का प्रसिद्ध श्लोक उल्लेखनीय हैं-

"यंत्र नार्यस्तु पूजन्ते रमन्ते तंत्र देवता:" ।

अर्थात जहां नारियों का सम्मान होता है, वहां देवताओं का निवास होता है । इसी सांस्कृतिक पृष्ठभूमि में 'द्वा सुपर्णा' गद्यकाव्य की नायिका कौमुदी का चरित्र अत्यंत महत्वपूर्ण रुप से उभरकर आता है । कौमुदी केवल एक साहित्यिक पात्र ही नहीं है, बल्कि वह भारतीय नारी की शक्ति, बुद्धि और नेतृत्व क्षमता का प्रतीक है। कौमुदी के कार्यों से स्पष्ट होता है कि नारी केवल परिवारिक भूमिका तक सीमित नहीं है, बल्कि वह समाज के सर्वांगीण विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है ।

शोध के उद्देश्य

1. कौमुदी के चरित्र का सम्यक् अध्ययन करना।
2. उसके व्यक्तित्व में निहित नारी-शक्ति के आयामों का विश्लेषण करना।
3. सामाजिक चेतना एवं ग्रामोत्थान की भावना का अनुशीलन करना।
4. नारी-शक्ति की भारतीय सांस्कृतिक अवधारणा का परीक्षण करना।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध वर्णनात्मक, विश्लेषणात्मक एवं व्याख्यात्मक पद्धति पर आधारित है। काव्य के मूल पाठ के साथ-साथ वैदिक साहित्य एवं संस्कृत ग्रंथों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। निम्न पद्धतियों का उपयोग किया गया है —

- पाठ विश्लेषण पद्धति
- वर्णनात्मक एवं व्याख्यात्मक पद्धति
- तुलनात्मक पद्धति

अपेक्षित परिणाम

1. कौमुदी नारी-शक्ति का बहुआयामी एवं सशक्त स्वरूप प्रस्तुत करती है।
2. वह सामाजिक परिवर्तन की प्रेरक शक्ति है, केवल साहित्यिक पात्र नहीं।
3. उसमें ज्ञान, करुणा, नेतृत्व एवं सेवा-भाव का परिपक्व समन्वय है।
4. वह लक्ष्मी एवं सरस्वती — दोनों रूपों में शक्ति की प्रतिनिधि है।
5. समकालीन संदर्भ में वह महिला सशक्तिकरण का अनुकरणीय आदर्श है।

बीज शब्द

नारी-शक्ति • कौमुदी • द्वा सुपर्णा • महिला सशक्तिकरण • सामाजिक चेतना • संस्कृत साहित्य • स्त्री-विमर्श • नारी-नेतृत्व

द्वा सुपर्णा की नायिका कौमुदी – शक्ति का प्रतीक

'द्वा सुपर्णा' काव्य का संक्षिप्त परिचय'

द्वा सुपर्णा शीर्षक वैदिक मित्रों से प्रेरित है-

"द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समानं वृक्ष परिषस्वजाते"

इस मंत्र में एक ही वृक्ष पर बैठे दो पक्षियों का प्रतीकात्मक वर्णन किया गया है। एक पक्षी फल का उपभोग करता है और दूसरा केवल साक्षी भाव से देखता है। यह प्रतीक मनुष्य के व्यावहारिक और आध्यात्मिक जीवन के दो पक्षों को दर्शाता है। द्वा सुपर्णा काव्य में भी इसी प्रकार जीवन के विभिन्न आयामों का चित्रण मिलता है। यहां व्यंजन शैली से प्रथम पक्षी है सुदामा है जो अपने गुरु की आज्ञा पालन करते हुए गृहस्थो के लिए इहलौकिक और पारलौकिक कल्याण का मार्ग दिखाने वाले हैं। वह सांसारिक भोग विलासों के प्रति आकर्षित नहीं होते हैं। दूसरा पक्षी यहां कौमुदी हैं जो अपने स्वार्थ हेतु नहीं अपितु लोक कल्याण के लिए अग्रसर रहती है। इस काव्य की नायिका अपने गुणों और कार्यों के माध्यम से समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने का प्रयत्न करती है।

कौमुदी का व्यक्तित्व – नारी शक्ति का स्वरूप

भारतीय संस्कृति में नारी को शक्ति का मूल स्त्रोत माना गया है। देवी परंपरा में दुर्गा, लक्ष्मी और सरस्वती के रूप में नारी के विविध रूप की कल्पना की गई है। 'द्वा सुपर्णा' की नायिका कौमुदी का चरित्र भारतीय नारी के सशक्त और प्रेरणादायक स्वरूप को अत्यंत प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करता है। उसका व्यक्तित्व यह सिद्ध करता है कि नारी केवल भावुकता और कोमलता की प्रतीक नहीं है, बल्कि वह समाज में परिवर्तन लाने वाली एक सशक्त नारी शक्ति का स्वरूप भी है। भारतीय परंपरा में नारी को शक्ति का स्वरूप माना गया है –

"या देवी सर्वभूतेषु शक्तिरूपेण संस्थिता"

कौमुदी का चरित्र इस विचारधारा को सजीव रूप से प्रस्तुत करता है। वह अपने विचारों और कर्मों के माध्यम से ग्रामीण जीवन में परिवर्तन लाने का प्रयत्न करती है। उसकी योजनाएं केवल व्यक्तिगत जीवन तक सीमित

नहीं है, अपितु वह पूरे समाज के उत्थान से जुड़ी हुई है। कौमुदी का व्यक्तित्व यह भी दर्शाता है की नारी में नेतृत्व क्षमता, सामाजिक चेतना और दूरदर्शिता जैसे गुण स्वाभाविक रूप से विद्यमान होते हैं। यही कारण है कि वह अपने ग्राम को एक आदर्श ग्राम बनाने में सफल होती है।

साहस और धैर्य का समन्वय

कौमुदी के चरित्र में साहस और धैर्य का अद्भुत संतुलन दिखाई देता है। जीवन में आने वाली कठिन से कठिन परिस्थितियों का वह धैर्यपूर्वक सामना करती है और अपने साहस के बल पर उनका समाधान खोजने का प्रयत्न करती है। किसी भी कार्य की सफलता केवल इच्छाओं से नहीं, बल्कि प्रयास करने और साहस से प्राप्त होती है।

"उद्यमेन हि सिद्धान्ति कार्याणि न मनोरथै:"

केवल कल्पनाओं से नहीं, अपितु निरंतर प्रयास और परिश्रम से ही कार्य से होते हैं। कौमुदी का चरित्र इस सिद्धांत को चरितार्थ करता है। वह कठिन परिस्थितियों से घबराती नहीं है , बल्कि उनका सामना साहस और धैर्य के साथ करती हैं। कौमुदी अद्भुत नेतृत्व शक्ति से संपन्न थी। वह मात्र वचनों से नहीं अपितु कार्यों से स्वयं को सिद्ध करती है। ग्राम परिवर्तन उन्नति हेतु उसने जो भी सोचा उससे पहले स्वयं किया उसके बाद उससे प्रेरित होकर नारी समुदाय स्वयं उसका अनुगामी हो गया।

ग्राम- स्वच्छता और सामाजिक जागरूकता

कौमुदी के व्यक्तित्व का एक महत्वपूर्ण पक्ष उसकी सामाजिक चेतना है। जब वह अपने ग्राम की स्थिति को देखती हैं, तो उसे वहां की मालिनता और अव्यवस्था अत्यंत दु:ख पहुंचाती है। वह यह समझता है कि किसी भी समाज की उन्नति के लिए स्वच्छता और अनुशासन अत्यंत आवश्यक है। इसी कारण वह ग्रामवासियों को प्रेरित करती है और उन्हें स्वच्छता के महत्व से परिचित कराती है। कौमुदी के प्रयासों से ग्राम के लोग एकत्र होकर सफाई का कार्य प्रारंभ करते हैं और धीरे-धीरे ग्राम का वातावरण बदलने लगता है। यह कार्य केवल सफाई तक सीमित नहीं था, बल्कि इसके माध्यम से कौमुदी ने ग्रामवासियों में सामूहिक उत्तरदायित्व की भावना भी उत्पन्न की। यह नारी शक्ति का एक महत्वपूर्ण पक्ष है कि वह समाज को संगठित करने और सकारात्मक दिशा देने की क्षमता रखती है। इस प्रकार कौमुदी का यह प्रयास यह स्पष्ट करता है की नारी केवल परिवार तक सीमित नहीं है, बल्कि वह समाज के विकास में भी सक्रिय भूमिका निभा सकती है।

नारी शिक्षा का प्रसार

कौमुदी के कार्यों में नारी शिक्षा का विशेष महत्व दिखाई देता है। वह यह समझती है कि किसी भी समाज की उन्नति नारी की शिक्षा पर निर्भर करती है। यदि नारी शिक्षित होगी तो वह अपने परिवार और समाज दोनों को प्रगति की दिशा में अग्रसर कर सकेगी। कौमुदी के प्रयासों से ग्राम की कन्याएं शिक्षित होने लगती हैं। शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात जब उनका विवाह अन्य ग्रामों में होता है, तब वे वहां भी अपने ज्ञान को संस्कारों के माध्यम से समाज में सुधार का कार्य करती है। इस प्रकार कौमुदी का कार्य केवल एक ग्राम तक सीमित नहीं रहता, बल्कि उसका प्रभाव अनेक ग्रामों तक पहुंचता है। इससे यह स्पष्ट होता है कि नारी शिक्षा समाज में व्यापक विकास का आधार बन सकती है। भारतीय संस्कृति में भी नारी शिक्षा के महत्व को स्वीकार किया गया है। शिक्षित नारी ही परिवार और समाज को सही दिशा प्रदान कर सकती है। कौमुदी का यह प्रयास नारी शिक्षा के इसी स्वरूप को उजागर करता है।

ग्रामोत्थान और सामाजिक नेतृत्व

कौमुदी के प्रयासों का परिणाम यह होता है कि उसका ग्राम धीरे-धीरे उन्नति और विकास का केंद्र बन जाता है। उसकी योजनाओं के कारण ग्राम में स्वच्छता, शिक्षा और सामाजिक जागरूकता का वातावरण उत्पन्न होता है। ग्राम के इस परिवर्तन को देखकर दूर-दूर से लोग उस ग्राम का निरीक्षण करने के लिए आने लगते हैं। वह यह जानना चाहते हैं किस प्रकार एक साधारण ग्राम इतनी उन्नति कर सकता है। कौमुदी की योजनाओं के कारण वह ग्राम इतना प्रसिद्ध हो जाता है कि उसे एक प्रकार से तीर्थ के समान सम्मान प्राप्त होने लगता है। यह स्थिति दर्शाती है कि एक जागरूक और दृढ़ निश्चय स्त्री अपने प्रयासों से पूरे समाज में परिवर्तन ला सकती है। इस प्रकार कौमुदी का चरित्र नारी के उस नेतृत्वपूर्ण स्वरूप को प्रस्तुत करता है जो समाज को नई दिशा देने की क्षमता रखता है।

आर्थिक स्वावलंबन की भावना

कौमुदी केवल सामाजिक और शैक्षणिक सुधार तक ही सीमित नहीं रहती, बल्कि वह ग्राम की आर्थिक स्थिति के विषय में भी गंभीरता से विचार करती है। जब वह ग्रामवासियों की दरिद्रता को देखती हैं तो उसका हृदय द्रवित हो उठता है। वह यह विचार करती है कि इस दरिद्रता का कारण क्या है? और इसका समाधान किस प्रकार किया जा सकता है? गहन विचार के पश्चात वह यह निर्णय लेती है कि ग्राम में उत्पन्न होने वाली वस्तुओं

का ही उपयोग किया जाए। इससे ग्राम की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ हो सकेगी और लोगों को आत्मनिर्भर बनाने का अवसर मिलेगा। इस प्रकार कौमुदी ग्रामवासियों को स्वदेशी और स्वावलंबन का मार्ग दिखाती है। यह नारी शक्ति का एक अत्यंत महत्वपूर्ण पक्ष है कि वह केवल समस्याओं को पहचानती ही नहीं, बल्कि उसके समाधान का मार्ग भी प्रस्तुत करती है।

स्वावलंबन और आदर्श जीवन पद्धति

कौमुदी का चरित्र केवल उपदेश देने तक सीमित नहीं है, बल्कि वह अपने जीवन में भी उन्हीं सिद्धांतों का पालन करती है जिन्हें दूसरों को अपनाने के लिए प्रेरित करती है। वह स्वयं चरखा चलाकर सूत कातती है और उसी से बने वस्त्रों को धारण करती है। उसके इस आदर्श जीवन का प्रभाव ग्राम की अन्य स्त्रियों पर भी पड़ता है और वे भी उसके मार्ग का अनुसरण करने लगती है। इसके अतिरिक्त कौमुदी स्त्रियों को यह भी प्रेरित करती है कि वह स्वर्ण एवं चांदी के आभूषण के स्थान पर प्रकृति से प्राप्त साधारण प्रसाधनों का उपयोग करें। इससे अनावश्यक खर्चे से बचा जा सकता है और सादगीपूर्ण जीवन अपनाया जा सकता है। कौमुदी का यह जीवन आदर्श यह सिद्ध करता है कि सच्चा नेतृत्व वही है जो केवल वाणी से नहीं बल्कि अपने आचरण से भी प्रेरणा प्रदान करें।

कौमुदी – लक्ष्मी और सरस्वती का समन्वित स्वरूप

कौमुदी के व्यक्तित्व को देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि मानो वह लक्ष्मी और सरस्वती दोनों का समन्वित स्वरूप हो। उसके भीतर ज्ञान, करुणा, विवेक और नेतृत्व जैसे गुणो का अद्भुत संतुलन दिखाई देता है। उसकी योजनाओं और कार्यों के परिणामस्वरूप केवल एक ग्राम ही नहीं, बल्कि संपूर्ण क्षेत्र के विकास और जागरूकता का वातावरण उत्पन्न होता है। उसकी प्रेरणा से शिक्षित हुई कन्याएं अन्य ग्रामों में जाकर भी समाज सुधार का कार्य करती है। इस प्रकार कौमुदी का व्यक्तित्व यह सिद्ध करता है की नारी केवल परिवार की संरक्षिका ही नहीं हैं, बल्कि वह समाज के सर्वांगीण विकास की आधारशिला भी है। भारतीय परंपरा में भी यह विचार व्यक्त किया गया है-

"यत्र नार्यस्तु पूजन्ते रमन्ते तत्र देवता:"

अर्थात जहां नारी का सम्मान होता है वहां देवताओं का निवास होता है। कौमुदी का चरित्र इसी विचार को सजीव रूप में प्रस्तुत करता है।

कौमुदी और नारी सशक्तिकरण

कौमुदी का चरित्र आधुनिक नारी सशक्तिकरण की अवधारणा की गहराई से जुड़ा हुआ है। आधुनिक समय में नारी- शिक्षा, विज्ञान, राजनीति, साहित्य और विभिन्न सामाजिक क्षेत्र में सक्रिय रूप से भाग ले रही हैं। वह केवल पारिवारिक सीमाओं तक सीमित नहीं रह गई है, बल्कि समाज के निर्माण और विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान दे रही ।है नारी सशक्तिकरण का अर्थ केवल अधिकारों को प्राप्त करना ही नहीं है, बल्कि अपने आत्मबल, आत्मविश्वास और क्षमता को पहचानना और तदनुसार कर्तव्यपालन करना भी है। कौमुदी का चरित्र इस विचार को अत्यंत प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करता है। भारतीय दर्शन में शक्ति और शिव के संबंध को अत्यंत महत्वपूर्ण माना गया है-

"शिव: शक्त्या युक्तो यदि भवति शक्त: प्रभवितुं।

न चेदेवं देवों न खलु कुशल: स्पन्दितुमपि ।।"

शक्ति के बिना शिव भी कोई कार्य करने में समर्थ नहीं होते हैं। शक्ति ही सृजन और विकास का मूलाधार है। कौमुदी का चरित्र इसी शक्ति का प्रतीक है।

नारी के आदर्श स्वरूप का प्रतीक

उपरोक्त विवेचन से यह स्पष्ट होता है कि द्वा सुपर्णा की नायिका कौमुदी नारी की बहुआयामी स्वरूप को प्रस्तुत करती है। उसके व्यक्तित्व में ज्ञान, विवेक, साहस, आत्मसम्मान, संवेदनशीलता और सामाजिक चेतना जैसे गुणों का समन्वय दिखाई देता है। कौमुदी का चरित्र यह संदेश देता है की नारी केवल समाज की सहायक शक्ति नहीं है, बल्कि वह स्वयं समाज की दिशा और भविष्य को निर्धारित करने की क्षमता रखती है। यदि नारी को उचित सम्मान और अवसर प्रदान किया जाए, तो वह अपने ज्ञान, साहस और विवेक के माध्यम से समाज में एक नई दिशा दे सकती है। इस प्रकार द्वा सुपर्णा की नायिका कौमुदी नारी शक्ति का एक सशक्त और प्रेरणादायक प्रतीक है, जो आज के समाज के लिए अत्यंत प्रासंगिक और मार्गदर्शक है।

निष्कर्ष

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर यह स्पष्ट होता है की कौमुदी का चरित्र इस सांस्कृतिक और दार्शनिक विचारधारा की सजीव रूप में प्रस्तुत करता है। वह यह सिद्ध करता है की नारी केवल करुणा और संवेदनशीलता का प्रतीक ही नहीं, बल्कि विज्ञान, साहस और आत्मबल की भी प्रतिमूर्ति है। उसका व्यक्तित्व यह संदेश देता है कि नारी को शिक्षा, सम्मान और अवसर प्रदान किया जाए तो वह समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने में सक्षम होती है। आधुनिक युग में नारी सशक्तिकरण का एक अत्यंत महत्वपूर्ण सामाजिक विषय बन चुका है। शिक्षा, विज्ञान, राजनीतिक, साहित्य और विभिन्न सामाजिक क्षेत्र में नारी की सक्रिय भागीदारी यह दर्शाती है कि वह समाज की एक महत्वपूर्ण शक्ति है इस संदर्भ में द्वा सुपर्णा की नायिका कौमुदी का चरित्र अत्यंत प्रासंगिक प्रतीक होता है, क्योंकि वह नारी के उस आदर्श स्वरूप को प्रस्तुत करता है जिसमें आत्मसम्मान, ज्ञान और सामाजिक चेतना का समन्वय दिखाई देता है। इस प्रकार यह कहा जा सकता है की द्वा सुपर्णा की नायिका कौमुदी केवल एक कथा पत्र नहीं है, बल्कि वह नारी शक्ति और नारी सशक्तिकरण की एक प्रेरणादायक प्रतीक है। उसका चरित्र यह संदेश देता है की नारी समाज की प्रगति और विकास की आधारशिला है, उसकी शक्ति को पहचानना तथा उसका सम्मान करना किसी भी सभ्य समाज के लिए अत्यंत आवश्यक है।

संदर्भ सूची

1.उपाध्याय, रामजी. द्वा सुपर्णा. वाराणसीः चौखम्बा विद्याभवन, संस्करणानुसार।

2.ऋग्वेद. 1.164.201

3.नारायण पण्डित. हितोपदेश

4.शङ्कराचार्य. सौन्दर्यलहरी. श्लोक 1।

5.देवीमहात्म्यम्, मार्कण्डेयपुराणान्तर्गत।

6.मनुस्मृति. 3.56

7. egyankosh.ac.in

8.all-women.co.uk

9.www.ijfmr.com

10.www.allreseaechjournal.com

11.www.ijcms2015.co

12. ऋग्वेद, 5.28,8.91

13. महाभारत, अनुशासनपर्व,4.5